अभ्यास पत्रक

पाठ – शुक्रतारे के समान

नाम :- ………… कक्षा :- ………… अवधि :- ………….. अनुक्रमांक :- …….. प्राप्तांक :- …….

1. अपठित गद्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"महादेव देसाई गांधीजी के शब्द थे, उनकी लेखनी थे, उनकी वाणी थे। वे सिर्फ सचिव नहीं थे, बल्कि हर कार्य में गांधीजी के सहयोगी और विचारों के संवाहक थे। वे गांधीजी के आश्रम जीवन, आंदोलनों, यात्राओं और लेखन के अभिन्न अंग बन गए थे। जेल में भी उन्होंने गांधीजी का साथ नहीं छोड़ा और वहां से भी लेखन और अनुवाद कार्य में संलग्न रहे। उन्होंने अपने जीवन को गांधी विचारधारा में इतना समर्पित कर दिया था कि उन्हें गांधीजी से अलग कल्पना करना असंभव हो गया।"

1. महादेव देसाई को 'गांधीजी के शब्द' क्यों कहा गया है?

उत्तर - ……………………………………………………………………………………………………

2. गांधीजी के कौन-कौन से कार्यों में महादेव देसाई सहभागी थे?

उत्तर - ……………………………………………………………………………………………………

3. महादेव का जेल में रहकर किया गया कार्य क्या दर्शाता है?

उत्तर - ……………………………………………………………………………………………………

2. Assertion-Reason आधारित प्रश्न – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** महादेव देसाई ने गांधीजी की आत्मकथा का अनुवाद किया।
   कारण: वे अंग्रेज़ी में अत्यंत निपुण और भावनाओं को पकड़ने में सक्षम थे।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही
5. **कथन:** महादेव देसाई को सार्वजनिक प्रशंसा पसंद थी।
   कारण: वे अपने लेखों में स्वयं का उल्लेख प्रमुखता से करते थे।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: गलत

3. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (MCQs) – (5x1=5 अंक)

6. गांधीजी ने महादेव देसाई को क्या उपाधि दी थी?
   (क) अपना दिमाग (ख) आत्मा (ग) हम्माल (घ) सचिव
7. 'शुक्रतारे के समान' शीर्षक किसकी विशेषता को दर्शाता है?
   (क) गांधीजी की (ख) लेखक की (ग) महादेव देसाई की (घ) भारत माता की
8. गांधीजी की आत्मकथा का अंग्रेज़ी में अनुवाद किसने किया?
   (क) महादेव देसाई (ख) बालमुकुंद गुप्त (ग) हरीशंकर परसाई (घ) माखनलाल चतुर्वेदी
9. महादेव देसाई किस आंदोलन के समय गांधीजी के साथ जेल गए थे?
   (क) असहयोग आंदोलन (ख) भारत छोड़ो आंदोलन
   (ग) सविनय अवज्ञा आंदोलन (घ) नमक आंदोलन
10. पाठ में 'बिजली की तरह गतिशील और विवेकशील' उपमा किसके लिए प्रयुक्त हुई है?
    (क) गांधीजी (ख) महादेव देसाई (ग) लेखक (घ) नेहरू जी

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. गांधीजी की अनुपस्थिति में महादेव देसाई ने पत्रों का उत्तर कैसे दिया करते थे?

उत्तर -

12. महादेव देसाई की लेखनी को ब्रिटिश अधिकारी कैसे देखते थे?

उत्तर -

13. पाठ में लेखक ने महादेव की सेवा भावना को किस उपमा से जोड़ा है?

उत्तर -

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. पाठ 'शुक्रतारे के समान' के आधार पर बताइए कि महादेव देसाई ने गांधीजी के विचारों और आंदोलनों को सफल बनाने में क्या भूमिका निभाई?

उत्तर -

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "महादेव देसाई जैसे लोगों की भूमिका ही किसी आंदोलन की आत्मा होती है" – इस कथन के आलोक में उनके जीवन और योगदान का वर्णन कीजिए।

उत्तर -

egyanarchive

उत्तर कुंजी

1. क्योंकि वे गांधीजी के विचारों को शब्द देते थे – लेखन, संपादन, अनुवाद।
2. लेखन, आंदोलन, आश्रम व्यवस्था, यात्राएँ और संवाद।
3. उनका समर्पण, अनुशासन और सेवा भावना को।
4. (क)
5. (घ)
6. (ग)
7. (ग)
8. (क)
9. (ग)
10. (ख)
11. वे गांधीजी के नाम आए पत्रों का उत्तर इस प्रकार देते थे कि उत्तर पढ़ने वाला समझता कि वह स्वयं गांधीजी का उत्तर है।
12. मंत्रमुग्ध करने वाली, स्पष्ट, प्रभावी और तथ्यपूर्ण।
13. 'शुक्रतारे' के समान – जो चुपचाप प्रकाश देता है।
14. महादेव देसाई ने गांधीजी के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने, उन्हें स्पष्ट रूप देने और आंदोलनों की योजना बनाने में बहुत बड़ा योगदान दिया। वे 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' के संपादक रहे, गांधीजी की आत्मकथा का अनुवाद किया और जेल में रहकर भी कार्यरत रहे। वे गांधीजी के विचारों को न केवल समझते थे, बल्कि उन्हें लागू भी करते थे। उन्होंने पत्र-व्यवहार, संवाद, भाषण और लेखन के माध्यम से गांधी दर्शन को जीवंत बनाए रखा। वे हर समय गांधीजी के साथ सक्रिय रहते थे और उनके बिना गांधीजी की कल्पना अधूरी थी।
15. किसी भी आंदोलन की सफलता में केवल नेता ही नहीं, उसके पीछे काम करने वाले समर्पित व्यक्तियों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। महादेव देसाई इसी श्रेणी में आते हैं। उन्होंने गांधीजी के विचारों, योजनाओं और आंदोलनों को शब्द, स्वर और स्वरूप दिया। वे गांधीजी के सचिव तो थे ही, परंतु उससे बढ़कर उनके अनुवादक, लेखक, सम्पादक और आत्मीय मित्र भी थे। आंदोलनों की जटिलता के बीच वे पत्रों का उत्तर, प्रेस का काम और आंदोलन की रूपरेखा पर लगातार काम करते रहे। उन्होंने स्वयं को कभी सामने नहीं रखा, बल्कि अपने कार्य से गांधीजी के विचारों को स्थापित किया। जेल में भी वे लेखन और अनुवाद में लगे रहे। उनकी मौन और ईमानदार सेवा ही किसी भी आंदोलन की आत्मा होती है। वे दिखाते हैं कि समर्पण, निःस्वार्थता और विचारों के प्रति ईमानदारी ही सच्चे कर्मयोग का मार्ग है।